कार्यवृत्त प्रतिवेदन (Minutes of the Meeting)

सभ्यता अध्ययन केंद्र के 9वें स्थापना दिवस पर राष्ट्रीय संगोष्टी

28 अप्रैल 2024, रविवार

प्रथम सत्र

1) संगोष्ठी का प्रारंभ माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, पुष्पार्चन एवं राष्ट्र मंत्र पाठ से हुई।
2) इसके बाद केंद्र के उपाध्यक्ष श्री प्रकाश चंद्र शर्मा जी ने स्वागत भाषण दिया और अभ्यागतों का अंगवस्त्र तथा पुस्तक भेंट कर स्वागत किया गया।
3) इसके पश्चात् श्री ऋतेश पाठक जी ने सभ्यता अध्ययन केंद्र की अब तक की गतिविधियों की विस्तारपूर्वक जानकारी दी एवं साथ ही गत वर्ष की गतिविधियों के बारे मे भी विस्तारित विवरण दिया जो इस प्रकार है–
    a) गत वर्ष कार्यक्रम कम हुए। एक पुस्तक लोकार्पण का कार्यक्रम हुआ और एक वार्षिक बैठक संपन्न हुई। दोनों ही कार्यक्रम दिल्ली में हुए।
    b) गत वर्ष जी 20 के तहत सी 20 में सभ्यता अध्ययन केंद्र भी सक्रिय रहा और उसके तहत दिल्ली में गुरु गोविंद सिंह जी के योगदान पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केंद्र के सदस्यों ने सी 20 की नागपुर बैठक तथा नामसई समिट में भी सहभागिता की।
    c) भारत के आर्थिक इतिहास पर शोध प्रगति पर है।इस शोध कार्य में डॉ. महेश कौशिक तथा श्री विजय दत्त संलग्न हैं।
    d) जनजातीय विषयों पर शोध हेतु गत वर्ष हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के जनजातीय अध्ययन केंद्र के साथ एक एमओयू किया गया है।
    e) शोध पत्रिका का प्रकाशन
    f) गत वर्ष दो पुस्तकें प्रकाशित की गईं। 1. जातीय वैमनस्य : सत्य या दुष्प्रचार तथा 2. जनजातीय देवलोक तथा धार्मिक परंपराएं
4) तत्पश्चात् संगोष्ठी का विषय प्रवेश केंद्र के निदेशक श्री रवि शंकर जी द्वारा किया गया। उन्होंने विकसित भारत के तात्कालिक और दूरगामी पक्षों की समालोचना करते हुए कहा कि भारतीय परिभाषा से देखा जाए तो आज भी भारत विकसित है जबकि विश्व को विकसित बनाए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने

कहा कि सभ्यता और सिविलाइजेशन में अंतर होता है। हमें इस अंतर को समझ कर विकास के मापदंडों को भारत के अनुसार स्थापित करना होगा, तभी हम एक सद्भावनापूर्ण तथा शांतिपूर्ण विश्व का निर्माण कर सकते हैं, जिसका निर्देश हमें वेदों में कृण्वंतो विश्वमार्यम् के रूप में मिलता है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि विकास के आज के मापदंड सभ्यता की कसौटी पर खरे नहीं उतरते और उन्हें भारतकेंद्रित शोध द्वारा ठीक किये जाने की आवश्यकता है।

5) राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ अशोक वार्ष्णेय जी ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में आरोग्य भारती द्वारा किये जाने वाले कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि किसी भी संस्था के कार्य के विस्तार के दो पक्ष होते हैं। पहला पक्ष होता है गुणात्मक (Qualitative) और दूसरा होता है संख्यात्मक (Quantitative)। सभ्यता अध्ययन केंद्र ने अभी तक गुणात्मक विस्तार काफी किया है और उसे अब अपने संख्यात्मक विस्तार पर भी ध्यान देना होगा।उन्होंने कहा कि केंद्र द्वारा संचालित बौद्धिक कार्यों का प्रभाव तभी दिखना प्रारंभ होगा, जब इसके दोनों पक्षों का विस्तार होगा। उन्होंने कहा कि इसके लिए केंद्र से जुड़े सभी सदस्यों को पूरी शक्ति से कार्य करना होगा। यह कार्य किसी एक व्यक्ति के करने का नहीं है।
6) तत्पश्चात सभ्यता अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष डॉ धर्मवीर शर्मा जी अपना अध्यक्षीय उद्बोधन दिया जिसमें उन्होंने औपनिवेशिक दुष्प्रचार के कारण भारतीय इतिहास में आई विकृतियों का उल्लेख करते हुए कहा कि इन विकृतियों को दूर करने के लिए केंद्र के कार्य का विस्तार करना आवश्यक है।

द्वितीय सत्र एवं तृतीय सत्र

1) द्वितीय सत्र का प्रारंभ डॉ अखिलेश चंद्र शर्मा जी केउद्बोधनसे हुआ जिसमे उन्होंने अनेकों उदाहरणों द्वारा समझाया कि भारतीय इतिहास एक गौरवपूर्ण इतिहास रहा है जिसे जानबूझकर जन जन तक नहीं पहुचाया जाता और जो पहुँच रहा है वो अधूरा या असत्य है। जैसे आर्य किसी दूसरे देश से नहीं आए थे बल्कि वे भारत की धरती मे ही जन्मे थे, लेकिन हमे यही पढ़ाया जाता है की वे बाहर से आए।
2) तत्पश्चात इन दोनोंसत्रों में सभ्यता अध्ययन केंद्र की आगामी योजनाओं तथा गतिविधि कैलंडर के निर्माण तथा लक्ष्य निर्धारण पर चर्चा हुई।सभी सदस्यों के सुझावों और उस पर चर्चा के बाद निम्न कार्यक्रम किये जाने का निर्णय लिया गया –
    a) **शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश मेंकाकोरी कांड के शताब्दी वर्ष पर कार्यक्रम**
    b) **वैद्य गुरुदत्त के साहित्य पर निबंध प्रतियोगिता।**
    c) **अंतरराष्ट्रीय मूलनिवासी दिवस पर कार्यक्रम।**

3) इन सत्रों में यह भी निश्चित किया गया कि केंद्र के सभी केंद्रों पर मासिक गोष्ठियों को नियमित किया जाएगा तथा सभी केंद्र वर्ष में न्यूनतम एक बड़े कार्यक्रम का आयोजन करेंगे। इसके तहत

   a) वाराणसी में इसी वर्ष सितम्बर मास भारतीय कालगणना पर एक कार्यक्रम करने का निश्चय किया गया।

   b) पटना में एक कार्यक्रम स्वाधीनता संघर्ष में बिहार के सांस्कृतिक योगदान पर किये जाने का भी निश्चय किया गया।

   c) इन्दौर में एक कार्यक्रम महर्षि दयानंद के 200वीं जयंती के अवसर पर सभ्यतागत संघर्ष में भारत की भूमिका पर करने का निश्चय किया गया।

4) केंद्र के शोध प्रयासों में कार्यशालाओं का विशेष महत्त्व है। कार्यशालाओं के आयोजन पर चर्चा की गई। एक सुझाव दिया गया कि दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों में केंद्र से जुड़े प्राध्यापकों के प्रयास से विभिन्न विषयों पर कार्यशालाएं आयोजित की जा सकती हैं।

5) केंद्र द्वारा सिजेरियन प्रसव के स्त्री स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने हेतु एक सर्वेक्षण की योजना बनाई गई है। उसकी जानकारी दी गई और सभी से सर्वेक्षण में सहभागिता करने का आह्वान किया गया।

6) केंद्र के कार्यविस्तार के लिए सभी सदस्यों से प्रति सप्ताह न्यूनतम पाँच घंटे दिये जाने का आह्वान किया गया। सभी सदस्यों से यह भी आग्रह किया गया कि वे नित्य कुछ अध्ययन करें और अपने अवलोकनों को केंद्र के साथ साझा किया करें। श्री रवि शंकर जी ने कहा कि अध्ययन की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने हेतु ही केंद्र द्वारा वार्षिक बैठक में प्रतिभागियों को अन्य उपहार की बजाय पुस्तकें भेंट की जाती है।

7) इसी सत्र में केंद्र की शोध पत्रिकापर चर्चा की गई। चर्चा का संचालन करते हुए पत्रिका के कार्यकारी संपादक श्री धीप्रज्ञ द्विवेदी जी ने पत्रिका की वर्तमान स्थिति और उसे और मजबूती प्रदान करने के लिए आवश्यक कार्यों की जानकारी दी।

   a) उन्होंने कहा कि पत्रिका हेतु अच्छे शोध आलेख चाहिएं।

   b) श्री विनोद कुमार जायसवाल जी ने पत्रिका को अकादमिक मान्यता और स्वीकार्यता हेतु आईएसएसएसएन तथा यूजीसी केयर लिस्ट में शामिल करवाने का सुझाव दिया।

   c) उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि पत्रिका की आजीवन सदस्यता का भी प्रावधान रखा जाए, जिससे अधिकाधिक लोगों को इससे जोड़ने में सुविधा हो।

d) श्री रविशंकर जी ने शोध पत्रिका को हिन्दी के साथ साथ अंग्रेजी भाषा में भी प्रकाशित करने का सुझाव रखा। यह निश्चित किया गया कि वर्तमान में इसकी आवृत्ति अर्धवार्षिक यानी वर्ष में दो की रखी जाएगी। इसके संपादन हेतु एक संपादक मंडल बनाने का निश्चय किया गया तथा इसकी जिम्मेदारी श्री पूर्णेन्दु देबनाथजी को दी गई। अंग्रेजी पत्रिका को सितंबर 2024 तक प्रकाशित करने का लक्ष्य रखा गया है।

चतुर्थ सत्र

1) चतुर्थ सत्र में केंद्र की आर्थिक गतिविधियों और संगठन विस्तार पर चर्चा की गई। सत्र का संचालन करते हुए सुश्री रूमा वर्मा जी ने आगामी तीन वर्षों के लिए केंद्र की नई प्रशासनिक समिति की घोषणा की।
2) चतुर्थ सत्र में केंद्र के वित्तीय नियमन पर चर्चा करते हुए श्री प्रशांत सिंह जी ने केंद्र की सदस्यता को और अधिक बढ़ाये जाने का प्रस्ताव रखा। संप्रति केंद्र की सदस्यता के दो प्रकारों वार्षिक सदस्य तथा आजीवन सदस्य के नियमों की जानकारी दी गई। इस पर कई सुझाव आए –
   a) आजीवन सदस्यों की संख्या बढ़ाई जाए।
   b) श्री यशोवर्धन राठौड़ जी ने सुझाव दिया कि आजीवन सदस्य के अतिरिक्त प्रतिमास सहयोग करने वाले सदस्य भी बनाए जाएं।सभी की सहमति से प्रतिमास न्यूनतम 500 रुपयों की राशि का सहयोग करने हेतु तत्काल दस सदस्य भी बनाए गए। यह निश्चित किया गया कि ऐसे सदस्यों को संरक्षक सदस्य कहा जाएगा।
   c) संरक्षक सदस्य या तो प्रतिमास न्यूनतम 500 रुपयों का सहयोग करेंगे अथवा एक बार एक लाख का सहयोग करके भी बनाए जा सकेंगे।
3) संगठन के कार्यों, विचारों एवं शोध को लोगों तक अधिक से अधिक पहुचाने के लिए सुश्री रूमा जी ने पॉडकास्ट का सुझाव दिया, जो आर्थिक दृष्टि से भी सहायक होगा। इस संबंध में केंद्र के यूट्यूब चैनल को प्रोत्साहित करने पर भी चर्चा की गई।
4) श्री अखिलेशचंद्र शर्मा जी ने ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के व्यावसायिक संचालन का सुझाव दिया जो कि संस्था को आर्थिक दृष्टि से बल प्रदान कर सकता है।

पंचम समारोप सत्र

- समारोप सत्र काप्रारंभ माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, पुष्पार्चन,राष्ट्र मंत्र के पाठ एवं अतिथियों के स्वागत से किया गया।
- इस सत्र मे डॉ आनंद वर्धन जी ने विशिष्ट वक्तव्य देते हुए कहा की पाश्चात्य इतिहासविद भारत के महान इतिहास को नकारते है,पाश्चात्य इतिहास उनके राजाओं के पराक्रम का इतिहास है तथा भारत मे भी ऐसे महान योद्धा/राजा हुए है सभ्यता अध्ययन केंद्र को ऐसे क्षत्रियों पर कार्य करना चाहिए जिन्होंने बाहरी आपदाओ से भारत को बचाया, साथ ही उन्होंने सुझाव दिया की भारत की विज्ञान परम्परा आदि पर भी कार्य करना चाहिए। आगे उन्होंने बताया की विश्व की विज्ञान परंपरा मे भारत का क्या योगदान रहा, भारत स्वयं घोषित विश्व गुरु नहीं है बल्कि विश्व ने हमे गुरु माना। उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया की फिबोनाची {Fibonacci} के खोजकर्ता लिओनार्दो बोनाची या लिओनार्दो ऑफ पीसा जो बहुत बड़े गणितज्ञ थे उन्होंने स्वयं कहा की मेरे पिता ने मुझे सीरिया भेजा क्योंकि वहाँ भारतीय गणितज्ञ आते थे और यह भारतीय गणित पद्धति है जिसे मैं यहाँ ला रहा हूँ, क्योंकि ये पद्धति उपयोगी है और रोम की पद्धति अनुपयोगी। 12 वी शताब्दी मे स्पेन कहता है गणित का ज्ञान यदि किसी के पास है तो वह भारत है और भारत हमारा शिक्षक है। बैत अल – हिकमाह {बग़दाद का शाही पुस्तकालय} कहता है आर्यभट्ट के ज्ञान के आगे सब कुछ तुच्छ है। परंतु दुखद बात ये है की भारत मे ही यह उनको विस्तार से नहीं पढ़ाया जाता है। हमने कैसे विश्व मानव को प्रभावित किया है इस पर सभ्यता अध्ययन केंद्र को ध्यान देना चाहिए।
- आनंद जी आगे सुझाव दिए की सभ्यता अध्ययन केंद्र को गुरुदत्त की रचनाओ पर, **काकोरी आंदोलन, बिहार के सांस्कृतिक आंदोलनों पर, देश के मठों के इतिहास पर** कार्य करना चाहिए जो हमारी संस्कृति को बचा के रखा है, गेंदा लाल दीक्षित के नेतृत्व मे चला आंदोलन, बालमनोविज्ञान, जातीय व्यवस्था मे अंग्रेजों द्वारा जो भ्रम और दुष्प्रचार फैलाया है उसे दूर करने के लिए केंद्र को काम करने चाहिए जिसके बारे मे पाठ्यक्रमों मे विस्तार से कुछ नहीं है।
- तद्पश्चात मुख्य अतिथि प्रो. अमरजीव लोचन जी ने अपने वक्तव्य मे सिविलाइजेशन और सभ्यता के अंतर पर चर्चा की और कहा कि इस विषय पर भारतीय भाषाओं मेंअधिकाधिक शोध किये जाएं और उन्हें जन जन तक पँहुचाया जाए। उन्होंने कहा किभारतीय परंपरा और बौद्ध एवं हिन्दू

की भावना के बीच के परस्पर संघर्ष की निराधार प्रचार को खंडित करने की आवश्यकता है, जिसमेंकेंद्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

- समारोप सत्र में एकात्म मानवदर्शन के विद्वान डॉ. महेशचंद्र शर्मा जी का अध्यक्षीय उद्बोधन हुआ एवं श्री रविशंकर जी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समाप्त किया गया।